BA Part 1 Phi Hons paper 1st 2019-20

Dr. Arti Kumari
Asso. Prof.
Deptt. Of Philosophy
B.N. College T. M.B.U , Bhagalpur

रामानुज द्वारा शंकर के माया का खंडन

वेदान्त दर्शन में माया का ~~सिद्धान्त~~ विचार अत्यन्त प्रभावोत्पादक है। शंकर अद्वैतवाद के प्रबल समर्थक हैं। अद्वैतवाद के पोषक होने के कारण वे एकमात्र ब्रह्म को ही पारमार्थिक रूप से सत्य मानते हैं इसके अतिरिक्त किसी अन्य की सत्ता पारमार्थिक रूप से सत्य नहीं है। व्यावहारिक दृष्टिकोण से ईश्वर, जगत एवं माया आदि की सत्ता को सत्य माना गया है। शंकराचार्य ने माया सिद्धान्त के द्वारा ही ~~व~~ जगत की व्याख्या की है। माया की दो शक्तियां हैं —

(1) आवरण
(2) विक्षेप

आवरण शक्ति अभावात्मक है जिसके कारण किसी वस्तु का यथार्थ स्वरूप छिप जाता है।

विक्षेप शक्ति के द्वारा एक वस्तु दूसरी वस्तु के रूप में प्रतीत होने लगती है। जैसे - माया के आवरण शक्ति के द्वारा ही ब्रह्म का यथार्थ पारमार्थिक स्वरूप छिप जाता है और माया की विक्षेप शक्ति के कारण एक ब्रह्म नाना रूपात्मक जगत के रूप में प्रतीत होने लगता है। शंकर का मानना है कि ~~ब्रह्म~~ नानारूपात्मक जगत का स्वरूप मिथ्या है। ब्रह्म का अद्वैत स्वरूप ही सत्य है। शंकर ने माया को इस कारण ~~...~~ पारमार्थिक रूप से

को अविद्या, अध्यास सूक्ष्म की तरह कहा है।
रामानुजाचार्य शंकर के माया सिद्धान्त से सहमति नहीं रखते। उनके अनुसार माया ईश्वर की शक्ति है जिसके द्वारा ईश्वर जगत की सृष्टि करता है। रामानुजाचार्य का विचार है कि चूँकि ईश्वर जगत की सृष्टि करता है और सृष्टिकर्ता के रूप में ईश्वर सत्य है तो उसके द्वारा निर्मित जगत असत्य कैसे हो सकता है। इस कारण रामानुजाचार्य ने शंकर के मायावाद के विरुद्ध अनेक तर्क दिए हैं, जिन्हें अनुपपत्ति कहा गया है। इसलिए इन तर्कों को अनुपपत्ति इसलिए कहा गया है क्योंकि इनके द्वारा माया की उत्पत्ति संभव नहीं है। रामानुजाचार्य ने सात प्रकार की अनुपपत्तियों को स्वीकार किया है, जो इस प्रकार हैं —

(1) आश्रयानुपपत्ति — माया या अविद्या का आश्रय या अधिष्ठान नहीं हो सकता। जैसे जीव को माया का आश्रय नहीं किया जा सकता क्योंकि जीव अविद्या का कार्य है। कार्य कारण का आश्रय नहीं हो सकता क्योंकि कार्य को कारण का आश्रय मानना तार्किक दृष्टि से असंगत होगा। दूसरी तरफ ब्रह्म को भी माया का आश्रय स्वीकार नहीं किया जा सकता क्योंकि ब्रह्म शुद्ध ज्ञान स्वप्रकाश है, जबकि अविद्या अंधकार या अज्ञान है और अंधकार प्रकाश का आश्रय नहीं हो सकता। दूसरी तरफ माया के

कर सकती है। इस कारण रामानुजाचार्य कहते हैं कि शंकर के मायावाद को स्वीकार नहीं किया जा सकता क्योंकि माया का आश्रय या आधार नहीं है। अतः इसे जगत् का आश्रय नहीं माना जा सकता है।

को मानना पड़ेगी आकृति जिससे अनवस्था दोष
उत्पन्न हो जाएगा। इस अनवस्था या अनन्तता दोष से
बचने के लिए असत माया को असत जगत का कारण
नहीं माना जा सकता। इस तरह माया को न तो सत
है न असत बल्कि इनसे तो अनिर्वचनीय है।

(4) अनिर्वचनीयानुपपत्ति - शंकर ने माया को
अनिर्वचनीय माना है क्योंकि यह सत असत से
परे है। इसे सत इसलिए नहीं कहा जा सकता क्योंकि
ज्ञान प्राप्ति के पश्चात अज्ञान का नाश हो जाता है।
पुनः इसे असत भी नहीं कहा जा सकता है क्योंकि
माया की व्यावहारिक सत्ता है। रामानुजाचार्य ने शंकर
के इस तर्क का खंडन करते हुए कहा है कि शंकर का माया
को अनिर्वचनीय कहना गलत है। पुनः इसका विवेचन
निरूपण करना विरोधाभास युक्त है क्योंकि
अनिर्वचनीय का अर्थ है जिसमें शब्दों के द्वारा निरूपण
न किया जा सके। तर्कशास्त्र का भी मानना है कि किसी
वस्तु की सत्ता का भाव या अभाव दो ही रूप में
अभिव्यक्त किया जा सकता है। इनसे परे किसी वस्तु की
सत्ता नहीं है। अतः माया को अनिर्वचनीय मानने का
अर्थ है माया की सत्ता नहीं है।

(5) प्रमाणानुपपत्ति - रामानुज का मानना है कि
माया का ज्ञान किसी प्रमाण के द्वारा नहीं होता है
क्योंकि प्रत्यक्ष प्रमाण के द्वारा किसी वस्तु के ...

होती है। अनिर्वचनीय वस्तु के लिए लिंग और [illegible] नहीं बन सकती है। अतः श्रुति प्रमाणों द्वारा भी आत्मा के अनिर्वचनीय स्वरूप की व्याख्या नहीं है, क्योंकि श्रुति के अनुसार आत्मा परमेश्वर की शक्ति है। अतः श्रुति प्रमाण के द्वारा भी आत्मा की अनिर्वचनीयता की उपलब्धि संभव नहीं है। अतः आत्मा की सत्ता को कोई प्रमाण सिद्ध नहीं कर सकता है।

(6) निवर्तकानुपपत्ति — शंकर ज्ञान के द्वारा अविद्या का निवारण मानते हैं। ज्ञान द्वारा आत्मा और ब्रह्म के ऐक्य का ज्ञान होते ही अज्ञान का नाश हो जाता है जैसे प्रकाश से अंधकार का। रामानुज का मानना है कि आत्मा जीवात्मा और सर्वज्ञ परमात्मा का ऐक्य संभव नहीं है, इसलिए अज्ञान का निवारण ऐक्य ज्ञान नहीं है। ज्ञान सविशेष होता है सर्वथा सविशेष होता है निर्विशेष ज्ञान संभव नहीं है। इस तरह रामानुजाचार्य आत्मा और ब्रह्म की एकता द्वारा शंकर ने अज्ञान के नाश को स्वीकार किया है। परन्तु रामानुजाचार्य का मानना है कि निर्गुण, निर्विशेष ब्रह्म का ज्ञान सविशेष जीव के द्वारा संभव नहीं है।

(7) निवृत्ति निवृत्त्यनुपपत्ति — रामानुज का मानना है कि यदि अज्ञान का निवारण संभव नहीं होगा अज्ञान की निवृत्ति भी नहीं हो सकती। यह तर्क शंकर के मोक्ष

~~विशुद्ध ज्ञान की प्राप्ति नहीं की जा सकती~~ यह
विशुद्ध ज्ञान है। यह मोक्ष का कारण है। आत्मा के
अभाव में भी ब्रह्मभाव संभव है। रामानुज का मानना
है कि माया वास्तविक है जिसका केवल ज्ञान से ही
विनाश संभव नहीं है। जीव का बंधन वास्तविक है
कर्मजन्य है जिसका विनाश केवल ज्ञान से न होकर
भक्ति कर्म और ज्ञान तीनों के सम्मिलित रूप से
ही संभव है। इस तरह रामानुज शंकर के अविद्या
निवृत्ति रूप मोक्ष को स्वीकार नहीं करते।

उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता
रामानुज ने माया का खंडन कर शंकर के समस्त
सिद्धान्तों जिसमें मोक्ष भी सम्मिलित है का
खंडन कर देते हैं। क्योंकि माया पर ही शंकर के
समस्त सिद्धान्त आधारित है। माया के अनिर्व-
चनीय होने से वह सत् असत् से परे हो जाता है।
पुनः ~~इसमें~~ वह ब्रह्म की शक्ति के रूप में स्वीकार
नहीं किया जा सकता क्योंकि ब्रह्म सत्य है। इस
तरह माया का खंडन कर शंकर के समस्त दर्शन की
नींव हिला दी है।